भारतीय पारंपरिक ज्ञान प्रणाली: प्रासंगिकता एवं महत्व

जयंत मिश्रा*

***रिसर्च स्कॉलर, आई.ई.एस. विश्वविद्यालय, भोपाल**

ईमेल: mishrajayant2@gmail.com

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.19485642

Received on: 23/02/2026 Accepted on: 09/04/2026 Published on: 09/04/2026

सारांश:

यह शोध-पत्र भारतीय पारंपरिक ज्ञान प्रणाली (Indian Traditional Knowledge System) की प्रासंगिकता एवं महत्व का विश्लेषण प्रस्तुत करता है, जो हजारों वर्षों से भारतीय संस्कृति, दर्शन और वैज्ञानिक चिंतन की आधारशिला रही है। अध्ययन में यह स्पष्ट किया गया है कि यह ज्ञान प्रणाली केवल सांस्कृतिक विरासत नहीं, बल्कि एक समग्र, तर्कसंगत और व्यवहारिक ज्ञान तंत्र है, जो मानव जीवन के विभिन्न आयामों—स्वास्थ्य, शिक्षा, पर्यावरण और सामाजिक विकास—में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। शोध में आयुर्वेद, योग, वैदिक गणित, पारंपरिक खेलों तथा आदिवासी समुदायों के ज्ञान को प्रमुख उदाहरणों के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जो न केवल व्यक्तिगत विकास बल्कि सामुदायिक और पर्यावरणीय संतुलन को भी बढ़ावा देते हैं। इसके साथ ही राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के माध्यम से पारंपरिक ज्ञान के शैक्षणिक एकीकरण तथा सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) में इसके योगदान को भी रेखांकित किया गया है। अध्ययन यह भी दर्शाता है कि पारंपरिक ज्ञान के संरक्षण हेतु TKDL जैसी पहलें महत्वपूर्ण हैं, हालांकि संस्थागत सहयोग की कमी, आधुनिकीकरण का दबाव और संसाधनों की सीमाएँ प्रमुख चुनौतियाँ बनी हुई हैं। अंततः शोध यह निष्कर्ष प्रस्तुत करता है कि पारंपरिक और आधुनिक ज्ञान के समन्वय द्वारा एक समावेशी, टिकाऊ और आत्मनिर्भर समाज का निर्माण संभव है, जो वैश्विक कल्याण के आदर्श "वसुधैव कुटुंबकम्" को साकार कर सकता है।

मुख्य शब्द: *भारतीय पारंपरिक ज्ञान, आयुर्वेद एवं योग, वैदिक गणित, पर्यावरण संरक्षण, SDGs, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020|*

प्रस्तावना:

भारतीय पारंपरिक ज्ञान प्रणाली (Traditional Knowledge System) सहस्राब्दियों से विकसित एक समृद्ध, बहुआयामी एवं सतत ज्ञान परंपरा है, जो भारतीय संस्कृति, दर्शन तथा आध्यात्मिकता की गहन आधारभूमि पर आधारित

है। यह प्रणाली केवल सांस्कृतिक विरासत तक सीमित नहीं है, बल्कि वैज्ञानिक चिंतन, व्यावहारिक ज्ञान तथा जीवन-दर्शन का एक समन्वित और संगठित तंत्र प्रस्तुत करती है, जो वर्तमान समय में भी अत्यंत प्रासंगिक एवं उपयोगी सिद्ध हो रही है (Radhakrishnan, 2017; Singh, 2018)। वास्तव में, भारतीय ज्ञान प्रणाली अनुभवजन्य (empirical), तर्कसंगत (rational) तथा अनुप्रयुक्त (applied) ज्ञान का एक ऐसा समेकित ढांचा है, जो मानव जीवन के विभिन्न आयामों—व्यक्तिगत, सामाजिक एवं आध्यात्मिक—को संतुलित रूप से विकसित करने का मार्ग प्रशस्त करता है (Balasubramanian, 2019)। भारतीय ज्ञान परंपरा की संकल्पना में ज्ञान, विज्ञान एवं जीवन-दर्शन की त्रिमूर्ति अंतर्निहित है, जिसका विकास अनुभव, अवलोकन, प्रयोग तथा गहन विश्लेषण की सतत प्रक्रिया के माध्यम से हुआ है। इस परंपरा का मूलाधार वेद, उपनिषद तथा अन्य शास्त्रीय ग्रंथ हैं, जिन्होंने हजारों वर्षों से ज्ञान के सतत एवं अक्षुण्ण प्रवाह को संरक्षित एवं संवर्धित किया है। ये ग्रंथ न केवल दार्शनिक चिंतन के स्रोत हैं, बल्कि सामाजिक, नैतिक एवं वैज्ञानिक मूल्यों के भी महत्वपूर्ण आधार हैं, जो भारतीय ज्ञान प्रणाली को वैश्विक परिप्रेक्ष्य में विशिष्ट पहचान प्रदान करते हैं।

मूल विशेषताएँ:

भारतीय ज्ञान प्रणाली की प्रमुख विशेषता इसकी तर्कमूलक (rational) एवं मूल्यनिष्ठ (value-oriented) प्रकृति है। यह प्रणाली केवल सैद्धांतिक ज्ञान तक सीमित नहीं है, बल्कि व्यावहारिक जीवन में उसके अनुप्रयोग पर विशेष बल देती है। इसका आधार तर्क, अनुभव तथा मानवीय मूल्यों का समन्वय है, जो इसे एक समग्र एवं जीवनोपयोगी ज्ञान प्रणाली बनाता है। साथ ही, इसकी जिज्ञासा-आधारित प्रवृत्ति निरंतर खोज, नवाचार और अनुसंधान को प्रोत्साहित करती है। यह ज्ञान प्रणाली केवल व्यक्तिगत उन्नति तक सीमित नहीं है, बल्कि सामाजिक कल्याण एवं सामूहिक विकास को भी समान रूप से महत्व देती है।

प्रमुख क्षेत्र एवं उदाहरण

भारतीय पारंपरिक ज्ञान प्रणाली के अंतर्गत विभिन्न क्षेत्र इसकी व्यापकता एवं प्रासंगिकता को दर्शाते हैं। आयुर्वेद विश्व की प्राचीनतम चिकित्सा प्रणालियों में से एक है, जो लगभग 5000 वर्षों से विकसित होती रही है और 'त्रिदोष सिद्धांत' (वात, पित्त, कफ) पर आधारित होकर शरीर के संतुलन को स्वास्थ्य का आधार मानती है। इसकी व्यक्तिगत चिकित्सा पद्धति में व्यक्ति की प्रकृति एवं स्वास्थ्य-स्थिति के अनुसार उपचार किया जाता है तथा प्राकृतिक औषधियों के साथ रोग-निवारण पर भी विशेष बल दिया जाता है। इसी प्रकार, योग शरीर, मन और आत्मा के समन्वित विकास की प्रक्रिया है, जिसमें महर्षि पतंजलि द्वारा प्रतिपादित अष्टांग योग व्यक्ति के शारीरिक स्वास्थ्य, मानसिक शांति तथा आत्म-नियंत्रण को सुदृढ़ करता है (Sharma, 2019)। इसके अतिरिक्त, पारंपरिक खेल—जैसे कुश्ती, खो-खो, गिल्ली-डंडा, तीरंदाजी एवं

कबड्डी—न केवल शारीरिक क्षमता एवं सहनशक्ति को बढ़ाते हैं, बल्कि मानसिक स्फूर्ति, रणनीतिक सोच, टीम-वर्क तथा नेतृत्व कौशल के विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं और व्यक्तियों को उनकी सांस्कृतिक जड़ों से जोड़ते हैं। वैदिक गणित, जिसे स्वामी भारती कृष्ण तीर्थ द्वारा व्यवस्थित किया गया, गणितीय समस्याओं को सरल एवं तीव्र गति से हल करने की एक प्रभावी पद्धति है, जो मानसिक विकास एवं तार्किक क्षमता को प्रोत्साहित करती है (Singh, 2018)। इसके साथ ही, स्वदेशी (आदिवासी) समुदाय पारंपरिक ज्ञान के महत्वपूर्ण संरक्षक हैं, जिनका जीवन प्रकृति के साथ संतुलन एवं सामंजस्य पर आधारित है; उनका ज्ञान जल, जंगल और जमीन के संरक्षण तथा सतत विकास में महत्वपूर्ण योगदान देता है, जो वर्तमान वैश्विक परिप्रेक्ष्य में अत्यंत प्रासंगिक है (Kapoor & Joshi, 2022; Ministry of Environment, Forest and Climate Change, 2006)।

विशिष्ट उदाहरण:

भारतीय स्वदेशी जनजातियाँ पारंपरिक ज्ञान की महत्वपूर्ण संवाहक हैं, जिनकी जीवन-शैली प्रकृति के साथ संतुलन एवं सामंजस्य पर आधारित है। उदाहरणस्वरूप, अपतानी जनजाति (पूर्वी हिमालय) धान-मछली की मिश्रित खेती, छत कृषि एवं उन्नत जल प्रबंधन तकनीकों के माध्यम से सतत कृषि का उत्कृष्ट मॉडल प्रस्तुत करती है, जिससे जल संरक्षण एवं भूमि की उत्पादकता में वृद्धि होती है। टोडा जनजाति (नीलगिरी पहाड़ियाँ) पर्यावरणीय संकेतों, विशेषतः जीव-जंतुओं के व्यवहार के आधार पर मौसम पूर्वानुमान में दक्ष है, जबकि सॉलिगा जनजाति (कर्नाटक) नियंत्रित वनाग्नि के माध्यम से आक्रामक प्रजातियों को नियंत्रित कर स्थानीय जैव-विविधता के संरक्षण में योगदान देती है तथा जल प्रबंधन की पारंपरिक तकनीकों का उपयोग करती है। औषधीय ज्ञान के क्षेत्र में कानी जनजाति (पश्चिमी घाट) 700 से अधिक औषधीय पौधों के उपयोग की समृद्ध परंपरा रखती है, जिसका उपयोग विभिन्न रोगों के उपचार में किया जाता है। इसी प्रकार, मध्यप्रदेश के पातालकोट (छिंदवाड़ा) क्षेत्र की भारिया जनजाति जड़ी-बूटी आधारित हर्बल चिकित्सा के माध्यम से अनेक रोगों के उपचार में दक्ष है। बैगा जनजाति अपनी सांस्कृतिक परंपराओं, विशेषतः शारीरिक अलंकरण (टैटू) एवं लोकाचार के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, जो सांस्कृतिक पहचान के साथ-साथ आजीविका का भी साधन बन रहा है। गोंड जनजाति अपनी समृद्ध लोक-कला, प्रकृति-आधारित जीवनशैली तथा कोदो-कुटकी जैसे पोषक एवं पर्यावरण-अनुकूल खाद्य पदार्थों की खेती के माध्यम से सांस्कृतिक एवं आर्थिक विकास में योगदान देती है। इस प्रकार, भारतीय जनजातीय समुदायों का पारंपरिक ज्ञान न केवल सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण करता है, बल्कि पर्यावरणीय संतुलन, सतत विकास तथा सामुदायिक जीवन मूल्यों को सुदृढ़ करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में एकीकरण

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भारतीय ज्ञान प्रणाली (Indian Knowledge System–IKS) के मुख्यधारा की शिक्षा में एकीकरण पर विशेष बल दिया गया है, जिसका उद्देश्य आधुनिक ज्ञान के साथ भारतीय सांस्कृतिक एवं बौद्धिक परंपराओं का समन्वय स्थापित करना है (Government of India, 2020)। इस नीति के अंतर्गत शैक्षणिक एकीकरण को प्रोत्साहित करते हुए भारतीय पारंपरिक ज्ञान को शिक्षा एवं अनुसंधान व्यवस्था का अभिन्न अंग बनाया जा रहा है, जिससे ज्ञान के समग्र एवं बहुआयामी स्वरूप को विकसित किया जा सके। साथ ही, विज्ञान, गणित, सामाजिक विज्ञान एवं भाषाओं जैसे विभिन्न विषयों में IKS के तत्वों को पाठ्यक्रम में सम्मिलित कर शिक्षण प्रक्रिया को अधिक संदर्भित एवं सांस्कृतिक रूप से समृद्ध बनाया जा रहा है। नीति के अंतर्गत पारंपरिक ज्ञान के संरक्षण, अध्ययन एवं दस्तावेजीकरण हेतु विशेष अनुसंधान केंद्रों की स्थापना पर भी बल दिया गया है, जिससे विज्ञान एवं संस्कृति के समन्वित विकास को बढ़ावा मिल सके। इसके अतिरिक्त, अंतर्विषयक (interdisciplinary) दृष्टिकोण के माध्यम से पारंपरिक एवं आधुनिक ज्ञान के एकीकरण को प्रोत्साहित किया जा रहा है, जो तकनीकी नवाचार के साथ सांस्कृतिक मूल्यों की सुरक्षा सुनिश्चित करता है। भाषा संरक्षण भी इस नीति का एक महत्वपूर्ण आयाम है, जिसके अंतर्गत भारतीय भाषाओं के माध्यम से स्वदेशी ज्ञान तक पहुँच को सुलभ बनाकर उसके संरक्षण एवं प्रसार को प्रोत्साहित किया जा रहा है।

सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) में योगदान:

भारतीय पारंपरिक ज्ञान प्रणाली (IKS) न केवल भारत के संदर्भ में, बल्कि वैश्विक स्तर पर भी अत्यंत महत्वपूर्ण है, विशेषतः सतत विकास लक्ष्यों (Sustainable Development Goals–SDGs) की प्राप्ति में इसकी भूमिका उल्लेखनीय है (NITI Aayog, 2021)। यह प्रणाली स्थानीय परिस्थितियों के अनुरूप विकसित ज्ञान पर आधारित होने के कारण SDG 2 (भुखमरी समाप्ति) के अंतर्गत सतत कृषि पद्धतियों, पारंपरिक खाद्य तकनीकों एवं खाद्य सुरक्षा को सुदृढ़ करती है। इसी प्रकार, SDG 6 (स्वच्छ जल) के संदर्भ में पारंपरिक जल प्रबंधन प्रणालियाँ जल संरक्षण एवं स्वच्छता को बढ़ावा देती हैं। SDG 13 (जलवायु कार्य) के अंतर्गत यह ज्ञान प्रणाली जलवायु अनुकूलन एवं शमन रणनीतियों के विकास में सहायक सिद्ध होती है। साथ ही, SDG 10 (असमानता में कमी) के अंतर्गत सामुदायिक सहभागिता एवं सामाजिक न्याय की अवधारणा को प्रोत्साहित करती है, जबकि SDG 16 (शांति, न्याय एवं सुदृढ़ संस्थान) के संदर्भ में स्थानीय न्याय व्यवस्था एवं सामुदायिक संस्थाओं को सशक्त बनाती है। इस प्रकार, भारतीय पारंपरिक ज्ञान प्रणाली का शैक्षणिक एकीकरण

एवं उसका आधुनिक संदर्भ में अनुप्रयोग केवल पूरक ज्ञान तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक आत्मनिर्भर, समावेशी एवं सांस्कृतिक रूप से समृद्ध ज्ञान-आधारित समाज के निर्माण की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है।

संरक्षण के प्रयास:

पारंपरिक ज्ञान डिजिटल पुस्तकालय (TKDL):

पारंपरिक ज्ञान डिजिटल पुस्तकालय (Traditional Knowledge Digital Library – TKDL) की स्थापना वर्ष 2001 में वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद (CSIR) तथा आयुष मंत्रालय के संयुक्त तत्वावधान में की गई, जिसका प्रमुख उद्देश्य भारत के पारंपरिक ज्ञान को संरक्षित कर उसे डिजिटल स्वरूप में विकसित करना तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर उसके दुरुपयोग को रोकना है। TKDL भारत की समृद्ध औषधीय एवं पारंपरिक विरासत के संरक्षण के साथ-साथ बायोपायरेसी की रोकथाम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है (CSIR & Ministry of AYUSH, 2001)। यह एक सशक्त पूर्व-कला (prior art) डेटाबेस के रूप में कार्य करता है, जिसका उपयोग वैश्विक पेटेंट कार्यालयों द्वारा पारंपरिक ज्ञान से संबंधित अवैध पेटेंट दावों को अस्वीकार करने हेतु किया जाता है। इसकी प्रमुख विशेषताओं में पारंपरिक ज्ञान को बायोपायरेसी से सुरक्षा प्रदान करना, पेटेंट संरक्षण सुनिश्चित करना, बहुभाषीय (पाँच अंतर्राष्ट्रीय भाषाओं में) पहुँच उपलब्ध कराना तथा आयुर्वेद, यूनानी, सिद्ध और योग से संबंधित लगभग 34 मिलियन पृष्ठों की व्यापक जानकारी का संकलन शामिल है। TKDL की प्रभावशीलता का प्रमाण 'हल्दी पेटेंट रद्दीकरण' जैसे मामलों में देखा जा सकता है, जहाँ पारंपरिक ज्ञान के आधार पर दिए गए पेटेंट को निरस्त किया गया, तथा 'कोलगेट-पामोलिव केस' में भी भारतीय जड़ी-बूटियों से संबंधित दावों को सफलतापूर्वक चुनौती दी गई। इस प्रकार, TKDL पारंपरिक ज्ञान के संरक्षण, वैधानिक सुरक्षा तथा वैश्विक स्तर पर भारत की बौद्धिक संपदा की रक्षा का एक महत्वपूर्ण माध्यम है।

सामुदायिक वन अधिकार:

वन अधिकार अधिनियम, 2006 के अंतर्गत भारत के आदिवासी समुदायों को उनके पारंपरिक वन क्षेत्रों पर वैधानिक अधिकार प्रदान किए गए हैं, जिसका उद्देश्य वन संसाधनों का संरक्षण, पुनर्जनन एवं सतत प्रबंधन सुनिश्चित करते हुए सामुदायिक अधिकारों की सुरक्षा करना है। इस अधिनियम के माध्यम से ग्राम सभा को वन प्रबंधन की केंद्रीय भूमिका प्रदान की गई है, जिससे स्थानीय समुदायों की सहभागिता एवं उत्तरदायित्व को सुदृढ़ किया जा सके। तथापि, भारतीय पारंपरिक ज्ञान प्रणाली के संरक्षण एवं संवर्धन के समक्ष अनेक चुनौतियाँ विद्यमान हैं, जिनमें प्रमुखतः संस्थागत सहयोग का अभाव, आधुनिकीकरण एवं पश्चिमी शिक्षा प्रणाली का बढ़ता प्रभाव, अनुसंधान एवं विकास हेतु सीमित वित्तीय संसाधन, तथा मानकीकरण एवं प्रमाणीकरण की जटिलताएँ शामिल हैं। इन चुनौतियों के समाधान हेतु एक समन्वित एवं बहुआयामी

दृष्टिकोण आवश्यक है। प्रो. वाई. नायुदम्मा के शब्दों में, "पारंपरिक का आधुनिकीकरण करें तथा आधुनिक का पारंपरिकरण करें" — यह विचार पारंपरिक एवं आधुनिक ज्ञान के संतुलित एकीकरण की दिशा में मार्गदर्शक सिद्ध होता है। इसके लिए तकनीकी समन्वय, वैज्ञानिक विधियों द्वारा सत्यापन, शिक्षा प्रणाली में व्यवस्थित समावेश तथा नीतिगत स्तर पर प्राथमिकता सुनिश्चित करना अत्यंत आवश्यक है, ताकि भारतीय पारंपरिक ज्ञान प्रणाली को समकालीन संदर्भ में संरक्षित एवं सशक्त बनाया जा सके।

निष्कर्ष:

भारतीय पारंपरिक ज्ञान प्रणाली केवल एक ऐतिहासिक धरोहर नहीं है, बल्कि समकालीन चुनौतियों का समाधान प्रस्तुत करने वाला एक जीवंत और प्रासंगिक ज्ञान भंडार है। आयुर्वेद की समग्र चिकित्सा पद्धति, योग का मानसिक-शारीरिक कल्याण, वैदिक गणित की तीव्र गणना विधियाँ, और आदिवासी समुदायों की पर्यावरण संरक्षण तकनीकें आज भी उतनी ही प्रभावी हैं जितनी सदियों पहले थीं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और TKDL जैसी पहलों के माध्यम से भारत इस अमूल्य विरासत को संरक्षित करने और आधुनिक संदर्भ में उपयोगी बनाने की दिशा में कार्य कर रहा है। भारतीय पारंपरिक ज्ञान प्रणाली आधुनिक चुनौतियों के समाधान हेतु एक महत्वपूर्ण साधन है **(Mishra & Mehra, 2023)**। यह दृष्टिकोण न केवल भारत की सांस्कृतिक पहचान को मजबूत बनाता है, बल्कि वैश्विक स्तर पर सतत विकास लक्ष्यों की प्राप्ति में भी महत्वपूर्ण योगदान देता है। आवश्यकता है इस ज्ञान प्रणाली को आधुनिक तकनीक के साथ जोड़कर एक समन्वित दृष्टिकोण अपनाने की, जो "वसुधैव कुटुंबकम्" के आदर्श के अनुरूप समस्त मानवता का कल्याण करे।

References:

- Government of India. (2020). National Education Policy 2020. Ministry of Education, New Delhi.
- CSIR & Ministry of AYUSH. (2001). Traditional Knowledge Digital Library (TKDL). Government of India.
- Mishra, Jayant & Mehra, Vinay. (2023). भारतीय पारंपरिक ज्ञान प्रणाली: प्रकृति, उपयोगिता एवं समकालीन प्रासंगिकता. Indian Knowledge System Cell, IISER Bhopal.
- Singh, R. P. (2018). Vedic Science and Indian Knowledge Tradition. New Delhi: DK Printworld.
- Radhakrishnan, S. (2017). Indian Philosophy and Knowledge Traditions. New Delhi: Oxford University Press.

- Sharma, R. C. (2019). योग और आयुर्वेद का वैज्ञानिक आधार. Varanasi: Chaukhambha Orientalia.
- Ministry of Environment, Forest and Climate Change. (2006). Forest Rights Act, Government of India.
- NITI Aayog. (2021). Sustainable Development Goals India Index Report. New Delhi.
- Kapoor, S. & Joshi, M. (2022). Indigenous Knowledge Systems and Sustainable Development in India. Journal of Indian Studies, 15(2), 45–62.
- Balasubramanian, R. (2019). Indian Knowledge Systems: A Holistic Framework for Integration in Education. Indian Council of Philosophical Research.